"झाँसी फ़ाइल्स"

विगत कई दिनों से क्रांतिदूत "झाँसी फ़ाइल्स" की चर्चा देख व सुन कर उसके प्रति उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। विषय और आवरण पृष्ठ दोनों ही, अंतरमन में अजीब सी हलचल उत्पन्न कर रहे थे। आदरणीय मनीष सर के स्नेह स्वरूप यह पुस्तक जब हाथ में आई आश्चर्य और आनंद दोनों ही भाव थे।

'समीक्षा करने का सामर्थ्य तो नहीं, पुस्तक पढ़कर उभरे भावों का शब्दरूप साझा कर रही'।

लेखक ने अपनी यह कृति मास्टर रुद्र नारायण सिंह के चरणों में समर्पित करते हुए जिस तरह उनसे परिचय कराया, क्रांति के यज्ञ में उनकी अमूर्त सेवा आभास हो गया था।

क्रांतिदूत शृंखला की झाँसी फ़ाइल्स की यात्रा काकोरी काण्ड से आरंभ होकर झाँसी और उसके आस-पास के क्षेत्रों तक पहुँचते हुए, इतिहास में झाँसी के अमूल्य योगदान से अवगत कराती है। मस्तिष्क पर छाप छोड़ती सरल भाषा शैली में लेखक ने प्रसंगों एवं घटनाओं के माध्यम से हमें उस काल खण्ड की यात्रा कराई है जो हमारी दृष्टि से सदैव अछूता रहा था।

क्रांतिदूत पढ़ने के संबंध में दो विशेष बिन्दु उल्लेखनीय हैं -

पहला यह कि हम क्रांतिकारियों को उनके नाम और चित्र के आगे उनके संपूर्ण चरित्र को जान सके। यहाँ लेखक ने प्रसंगों के माध्यम से सहज ही बता दिया कि आज़ाद को भोजन में क्या अतिप्रिय था,

कौन सी बातें थीं जिनपर उन्हें क्रोध आता था, वह किन बातों पर वह ठहाके लगाया करते थे वह बंदूक चलाने में निपुण तो थे ही, साथ ही दंबूक दंबूक भी खेल लेते थे।

दूसरा यह कि एक क्रांतिकारी के विशाल विटप रूप लेने के क्रम में उनकी जड़ों को पोषित करने हेतु उर्वरा बन जिन अप्रत्यक्ष क्रांतिकारियों का सहयोग रहा, हमारा उनसे परिचय होना भी आवश्यक है ...

आदरणीय मास्टरजी, सचीन्द्र नाथ, विश्वनाथ वैश्यम्पायन, सदाशिव मलकापुर, भगवान दास माहौर आदि कई नाम हैं जिन्हें जानकर ही हम आज़ाद को पूर्ण रूप से जान सकते हैं। आज़ाद के अज्ञातवास के दौरान हमें भगत सिंह के छद्म रूपों और उनके द्वारा किये अनेक कार्यों के विषय में भी मालूम चलता है।

पुस्तक चंद्रशेखर आज़ाद के सापेक्ष ही आज़ाद और मास्टरजी के आत्मीय संबध की कथा भी कहती है। जैसे-जैसे पाठक आगे बढ़ता है, वह पात्रों से जुड़ता जाता है। जुड़ाव ऐसा कि जब जब हरिशंकर ब्रम्हचारी का पुलिस से सामना हुआ अथवा वह विषम परिस्थिति में घिरे, पाठक को घबराहट महसूस हुई।

'शब्द और पाठक के मध्य का संबध; पाठक और पात्र का संबध बन जाना, शब्दों की सफलता का प्रमाण है।' अंत में दो दुर्लभ चित्र और उनसे संबद्ध घटनाक्रम संग विषेष कारण का भी वर्णन है।

हरिवंश श्रीवास्तव जी की पंक्तियाँ स्मृत हो उठीं-

'इस धरा पर नाम जिसने कर्म से अमर करा कायरों ने दुःख सहे हैं, वीर भोग्या वसुंधरा'

क्यों पढ़नी चाहिये क्रांतिदूत?-

इतिहास का वह अध्याय जो हमें कभी पढ़ाया नहीं गया, उसे जानने के लिये पढ़ें।

आवश्यक यह भी है- हमारी भावी पीढ़ी के ज्ञान के लिये हमारा जो दायित्व बनता है, उसके लिये भी पढ़े और पढ़ाएँ ...

सर्व भाषा ट्रस्ट के प्रकाशन में '**डॉ मनीष श्रीवास्तव** जी के गहन शोध के उपरांत लिखित, अमर शहीदों को श्रद्धांजलि स्वरूप #**क्रांतिदूत**'।

- ***सौम्या श्रीवास्तवा "सौम्यवर्षा"***